नं:— ४९८६

नाम प्रस्तार प्रभाकर:

कर्ता. श्री रत्न पुञ्ज:

पत्र.सं. ४— ०.सं. x

विषय: छन्द:शास्त्रम्

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रस्तारप्रभाकरः भाषायाम्

४९८७

4987

F. 2 5

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ॐ श्रीगजवदनायनमः अथप्रस्तारप्रभाकरलिख्यते प्रथममंगलाचरणवस्तुनिर्देशात्मक दोहरा दासोहंयहमतिपुरानमम्मैंकृतीसहारि
हरलीक्रीडाकारतिनगोपीश्रवरदारि संवतशशिमुनिवसुमहीचैत्रकृष्णपक्षसार उदयभयोगुरुपंचमीपरभाकरप्रस्तार १ अथअष्ट
कर्मनामानि काव्य प्रथमुसंख्यासमुझिकैकरिप्रस्तारवखानऊं सूचीनष्टउद्दिष्टमेरुपुनिध्वजापिठानऊं अथमर्कटीसहितस
मतिरवगपतिमनमानऊं कलावर्णकीदुहिगणकर्मयेषोडशजानऊं २ अथलघुगुरुस्वरूपज्ञानविधि दोहरा सूधीरेखालघु
समझिफिगुरुहुकुंडाकार इनमेंबरनैंछंदसभकोविदकरिप्रस्तार ३ अथसंख्यालक्षण इतीकलाअरुवर्नकेहूहैं इतेस्वरूप जा
तैंयहगननीलखैंसोसंख्याकविभूप ४ मात्रासंख्यायथा जितीकलामेंरूपहुयसोहैलघुलिखलेइ एकहैयथरिपुनिपूर्वअंगअंकसब
निशिरदेइ ५ आवैपरनअंकजहिंअंतलहूपरजोइ तितनेरूपवुताइयेयोंकलसंख्याहोइ ६ वर्णसंख्यायथा जितेवर्णकेरूपजहिंसहै
गुरुलिखिलेऊं तिनसिरअंकवनाइकैद्वैगुनरिद्विगुनेदेऊं ७ अंतदोहपरअंकजोआवैपरमसुजान उतनेरूपवनाइयेसंख्यावर्णनिधा
न ८ इतिसंख्या अथप्रस्तारलक्षण जितेरूपतेप्रकटकरिदीजैंजनदिखाइ ताहिकहतप्रस्तारसभजेकोविदकविराइ ९ मात्राप्र
प्रस्तारयथा काव्य सवगुरुचरणवनायआदिगुरुअथलघुदिजे अथऊर्धसममलिखिवचेसोवामपथरिज्जे गुरुथारेफिरिलघुलिखे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रीतिफिरिफिरियहकिजै सबहीलघुहै जाइ मतप्रस्तारगतिजै ९ दोहरा लघुआवतहै आदिमै विषमकलाजहां होइ समभैलघुआवैनही
कहतसवैकविलोई ॥ वर्णप्रस्तारयथा प्रथमहीकतरलघुधरै आगेऊर्ध्वसमानउवनैतेवामैलिखेगुरुहीश्रीपतिजान १२ वेरिवेरियहविधि
करतसबहीलघुहैअंत रीतिवरनप्रस्तारकीभाखौगिरिजाकंत इतिप्रस्तार अथसूचीलक्षण ३ तेअष्टकप्रस्तारमैंआदिलघूके
रूप अंतलघूकेहैरतेयहजानैंकविभूप १३ वहुरिआदिगुरुकेरतेइतेअंतगुरुजान आदिअंतलघुलेरतेपावैयहपहिचान १४
आदिअंतगुरुकेरतेसमुझैपरमप्रवीन तासोंसूचीकहतहैंजेकोविदरसलीन १५ मात्रासूचीयथा कलसंख्याकेअंकलिखिप्र
थमपकहैधारि पूर्वजुगलसमठानियेजितनीकलाविचार १६ पूर्वअंकतेपूर्वकोद्वितीयअंकहैजोइ उतनेहीलघुआदिहै
अंतउतेलघुहोई १७ पूर्वअंककेतेपूर्वकोतीजोअंकसुजानउतनेहीगुरुआदिहैअंतउतेगुरुमान १८ काम पूर्नअंककेतेपूर्वअंक
तीजोदरसावत आदिअंतलघुतितेविमलमतवर्णसुनावत तातेजोहैतृतीयअंकलखपावतआदअंतगुरुउतेमतलचीसमुझावत १९
वर्णसूचीयथा दोहरा अक्षरसंख्याअंककुलिलिखिद्वैथरिद्विगनवनाई पूर्नअंककेतेपूर्वजोद्वितीयअंककदरसाइ २० उतेआदिलघुरूपहैंउतेअं
तलघुजान उतेआदिगुरुकेसमुझिउतेअंतगुरुमानि पूर्नअंककेतेपूर्वकोत्रितयअंककविभूप आदिअंतलघुकेउतेलीजेसमुझिसरूप २२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्र० प्रभा० आदि अंत गुरु के उनें लेग नि सुमति निधान भाखी सूची वर्न की चंद्रचूड भगवान २२ इति सूची अथ नष्ट लक्षण जहिं कोऊ प्रस्तार को पू
२ छै कोउ रूप कहि दिखरावै नष्ट बदबरन ते है कबिभूप मात्रानष्ट यथा जितीमत प्रस्तार को पूछै रूप विगोस निनो मत लघु करि लि
खे या रे अंक सदेस २५ इक द्वै थरि सुनि पूर्व युग लिखिये अंक बनाय सबै लघु निसिर अंत को पूरन अंत कराय २६ पूछ्यो अंक घटाइ अ
पूर्न अंक में मित सेखर ह्यो लघु सिर निपरस गुफै चातुर चित्त २७ वहै मिलै तो अतिभलो नातर जोरि मिलाय तिन ततर लघु पर लघु मि
2 लै गुरु करि नष्ट बनाय २८ वर्ननष्ट यथा वर्ननष्ट पूछै जहाँ रूप विषम सम कोय विषम गुरू सम लघू लिखि उर्द्ध अर्थ करि सोय २९
विषम होय इकु मेलिकै अर्द्ध करै कवि वीर विषम गुरू सम लघु लिखेवाही विधि मतिधीर ३० तौलौं यह विधि कीजिये पूरन होय स
रूप बरननष्ट की रीति यह संकर कही अनूप ३१ इति नष्ट अथ उद्दिष्ट लक्षण मत्ता अथवा वर्न को लिखौ रूप लखि लेत ताहि कह
त उद्दिष्ट सब जे हैं सुमति निकेत ३२ मात्राउद्दिष्ट यथा जहाँ मत प्रस्तार को लिखि कै कोउ सुरूप गुनि पूछै यह कौन सो यों कहियें क
विभूप ३३ इक द्वै थरि गुनि पूर्व जुग दीजै अंक बनाइ दीह निके अथ पर लिखि है मत्ता के भाइ ३४ पूर्न अंक मै कम करै दीह नि सिर
के अंक सेष रहै सो रूप कहि कल उद्दिष्ट निसंक ३५ वर्नउद्दिष्ट यथा लिखि वर्न प्रस्तार को कोऊ रूप बनाय गुनि पूछै यह कौ २

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नसो यों कहियेक विराय ३६ इकथरि द्विगुनि बनाइ कै लिखै सर्व नि सिर अंक लघु अक्षर सिर अंक मैं जोर ऊ येक अ संक ३७ जितेको
यसो रूप कहियह जिय जानि खेगे सादी नि वर्न उद्दिष्ट की भांखी मो दिमरे सा ३८ इति उद्दिष्ट अथ मेरु लक्षण लखे अब्रक प्रस्तार
सब गुरु के रूप इ ते कर इक इक घटे कहें इते समुफ ले नसविवेक ३९ जाने सम लघु रीति यरु करु लींसमुखदाइ तासो मेरु बखानिये समुफि
समनि खेगराइ ४० मात्रा मेरु यथा कला मेरु के कूट को कोटा एक बनाय अंक एक लिखि भरक मलक हिको विद कविराय ४१ ऊरध अथ द्वै अग्र द्वै
सम चर लिखि बनाइ याही विधि फिर फिरि लिखै सम है सदन बढ़ाइ ४२ जिती मतको कीजिये आदि गेह गनि लेऊ मेरु अंत के चरन में इ
कइक अंक धरेऊ ४३ अलि लसि खुरतरैं चर आदि न हारऊ एक अंक तरिं दौरि सवारऊ फिरि इक कर इक न जिइ कर इक धारऊ तजे सडईल गल
नहिडारऊ दोहरा संध्यगे रुसिर अक कों वांई नरफासुवो रि ऊर्द्ध कौं नतासदन की दछुन चर अंक डौरि ४५ दोउ अंक मिलायकै लिखैरून चच
रमाइ याविधि सम की भरियें चक समयना हिं ४६ सर्वगुरु के आदि चर पर इक इक कछु ठि जान अंत सर्व लघु के समुफि मत मेह पहिचान
४७ वर्णमेरु यथा वर्न मेरु के सिखर के समद्धे सदन बनाइ फिरि याही विधि अथ लिखै इक इक सदन बढाइ ४८ आदि गेरु है वर्न सम फिर
धारै नको अंक आदि अंत सब चरन में गेह सब गुरु समुफि फिरि इक इक कछु टिमान ५० अंत सर्व लघु जानिये कही शंभु सुख दाइ वरन मेरु के

ऊर्द्ध बरन नखलेचर में एक अंक करखै = ५

इक इक लिखै निसंक ४९ से पहर सिरि अंक जु गन सब हीसदन जान आदि [illegible]

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्र० प्रभा० ३

भरनकीरीतियहैखगराइ ५१ इतिमेरु अथपताकालक्षण कहेराकठेमेरुमेतोहैजाहिंवाम जानियहैजासोंसबैवरुध्वजाअभिराम ५२ मात्राध्वजा
यथा अंककलाउद्दिष्टकेयपरियेप्रथमबनाइ ताकेनीचेदंडरचिकहतसुकविसमुदाइ ५३ पूर्वअंककमैंपूर्वकोदूजोअंकचढाइ सेखअंकअथरचिध्वजाजकों
दंडरमाइ ५४ लिखैसुकविवहसेखअथध्वजकोंदंडध्वजगेहु खगपतियरमशवैनसुनिशुनिविधिकीजैयेहु ५५ पूर्वअंककजेपूर्वकेत्रितियचतुर्थविचारि ए
कअंककलोचढिकैरैहैअनुक्रमधारि ५६ वचैसुध्वजकीपांतिमेंक्रमसोंलिखैवनाइ दंडध्वजागुरुपूर्वकेइकतौफेरिचढाइ ५७ आयेअंकनआनिये
कहीसंगुतमयकाइ इहैअनुक्रमसोंलिखैंपांतिबनाइबनाइ ५८ ध्वजाअंककेमैंचढतहैंजेउद्दिष्टकेअंक ध्वजमेसोध्वजनाचहैंजानइहैनिसंक ५९
आदिअंककउद्दिष्टकोजेवाहरदहिजाइ सौअथलिखियेदंडमेकहतसबैकविराइ ६० दंडसीसउद्दिष्टकोपूर्वअंककविराज सोमुयिलिखियेदंड
मैंयाकोयहीइलाजरि जितेकलाप्रस्तारकेरूपतितिहैंअंकसरस्वतध्वजमतकोजानौसुकविमसंक ६२ औरिअंककउद्दिष्टकेरहेतिन्हैंमेध्यानआ
दिपांतिध्वजसर्वगुरुउलिइकरकचढिमान ६३ वर्नपताकायथा प्रथमदंडरचिकैसुकविफिरिअगारसंवारि अंकवर्नउद्दिष्टकेसबलीजैविस्तारि ६४
पूर्वअंककमेपूर्वकोदूजोअंकचढाइ सेखअंकतहिरचिध्वजाफिरियहरीतिनिलसाइ ६५ पूर्वअंककेतेवामदिसित्रितियचतुर्थकएकअंककलौंचढिकैरै
याहीरीतिनिसंक ६६ वचैसुध्वजकीपांतिमेंक्रमसोलिखैवनाइ औरिपांतिकेभरनकीरीतिसुनौखगराइ ६७ पूर्वअंककजेचढिकैजामेंसों

२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कविराइ सो तुजिवानें सर्वकेरकलौफेविवृताइ ६८ वचैसभविथैं पांतिकरि उतिउतियहगातिवान जौलौंध्वजकेअंककदैभसलुरूपसमान ६९ ध्वजाअंककेमेचधतैरै
जैउदिसकेअंक ध्वजमैंसोध्वजनाचटैजानौयहैं निसंक ७० प्रथमपंपांतिहैसर्वगुरुपरइकरकच छिमान सर्वअंककजहासर्वलघुवर्नध्वजायहिचान ७१ इ
तिपताका अथमर्कटीलक्षण इतेवृत्तभेदइतेइतनेलघुइहजान इतेगुरूअक्षरइतेइतीकलायहिचान ७२ जातैंसबफैभेदयहुसबैपरमयवीन नारि
हिमर्कटीकरत हैंछंदर्सिधुकेमीन ७३ मात्रामर्कटीयथा वृत्तभेदलघुगुरुवर्नकलापांतिषट्वान वृत्तपांतिमैंक्रमहिगतियरियेअंककसुजान ७४ भेद
पांतिदूकदोइधरिसर्वजुगलफिरिदेत लेगपतिसमतिसनेहकरिकरिमोहिवषकेत ७५ लघुपंकतिइकदैधरैयहविधिअग्रकरेउ इकदैलेसिरअंकजु
तजोरिसवनिचरदेऊ ७६ गुरुपंकतिकेआदियरथरैरूनकविराय लघुपंकतिकेअंकसवअगेथरैबनाय ७७ लघुगुरुपंकतिअंककजेजोरैथरिचि
तचाहि लिखैवर्नकीपांतिमैंभलीभांतिकरिनाहि ७८ वृत्तिभेदकीपांतिकेउनिकेअंकसुजान कलापांतिलिखलीजियेकलमर्कटीविधान ७९
वर्नमर्कटीयथा वृत्तभेदलघुगुरुवर्नकलापांतिखटुधार वृत्तपांतिमैंक्रमहिगतियधरियेअंकसवार ८० भेदपांतिमैंभांतियहरुधरियेद्वैकोअंक
द्विगुतिद्विगुनिकरिहरियेसवेहीसदनतिसंक ८१ वृत्तभेदकीपांतिकेगुनिकेअंककसुदेत लिखैवर्नकीपांतिमैंभावीमोहिमहेश ८२ वृनपांतिकेअं
कजेअर्द्धअर्द्धकरिमित लघुगुरुपंकतिमैंलिखैखगपतिनिर्मलचित्त ८३ गुरुपंकतिमेंअंकजेतिगुनकरैकविसोयकलापांतिलिखिलीजि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्र॰प्रभा॰ ४

येवर्नमर्कटीहोइ ८४ इतिमर्कटी गौरीस्त्राननईडकेसिवचवलभयेचकोर कंकनअहिसंकल्पजलयपितहैं सीप्रतवमोर ८५ सुधासरोवरनीरजहिंजु
पयंचाननथाम रचीनरूंरसपुंजकवियहरचनाअभिराम ८६ जसउपकारनगर्वकोनकछुउपावनचित केवलचितविनोदकोयहश्रमकीन्हौमि
त ८७ नसपुमलारसपुंज निरंतरआपजहांनहि हूसरनाइवतायसकैअवकोपरवीननकीनभयो प्रतितेतिकस्योतहिगायसकै अनजान
नजाननहीजिसमे अनुभविनडौदिसमायकै नभमाहिकलायरवासिकीपरवापरनहनपायसकै ८८ ॥ इतिश्रीमद्रसपुंजविरचितेः
प्रस्तारप्रभाकराख्योग्रंथः परिपूर्णः ॥ ००

5

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri